सफलता 'मंथन' की, क्रमशः .....

सीहोर। गिरवेन्द्र जिला सीहोर के निवासी हैं। इन्होंने मंथन आईटीआई अमलाहा जिला सीहोर में इलेक्ट्रिकल ट्रेड में एडमीशन लिया और 2014 में आईटीआई की परीक्षा उत्तीर्ण की। गिरवेन्द्र वर्तमान में मध्यप्रदेश बिजली विभाग में मीटर रीडर के पद पर कार्यरत हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण भलिभांति कर पा रहे हैं। इन्होंने अपनी सफलता का श्रेय मंथन आईटीआई के समस्त विभाग को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया है।

जिलों से

● रिपोर्टर

खंडवा जिले में वन भूमि पर अतिक्रमण हटाने गए वनकर्मियों पर हमला, पथराव में एक गंभीर घायल

खंडवा। गुड़ी वन परिक्षेत्र में हजारों हेक्टयर वनभूमि को कब्जा मुक्त करने के लिए वन विभाग की टीम जंगल में दो दिनों से कार्रवाई कर रही है। 13 दिसम्बर सुबह सरमेश्वर वन परिक्षेत्र में नवाड़ की जमीन से कब्जा हटाने के लिए 46 वनकर्मियों का दल गया था।

वनकर्मियों पर पथराव शुरू कर दिया

वन भूमि में प्रवेश रोकने के लिए खंती खोदने का कार्य पोकलेन मशीन से करवाया जा रहा था। इसी दौरान सुबह करीब साढ़े दस बजे अतिक्रमणकारियों ने वनकर्मियों पर पथराव शुरू कर दिया। अचानक हुए हमले से वहां भगदड़ मच गई। पथराव में वन रक्षक संजय सिंह तोमर के सिर में पीछे की ओर पत्थर लगने से वह बेहोश हो गया। घटना में पांच-सात अन्य कर्मचारी भी घायल हुए हैं। गंभीर चोट लगने से वन रक्षक सिंह को जिला अस्पताल में भर्ती किया गया है।

बिना अनुमति के जुलूस, धरना व प्रदर्शन करने पर लगा प्रतिबंध

खंडवा मेंअपर जिला दंडाधिकारी केआर बड़ोले ने जिले में कानून व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए हैं। जारी आदेश के अनुसार सायबर अपराधों की घटनाओं को रोकने के लिए साइबर कैफे में सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य होगा। इसकी कम से कम एक महीने तक रिकार्डिंग सुरक्षित रखना होगी। सायबर कैफे में कार्यरत कर्मचारियों की पूरी जानकारी परिचय पत्र व फोटो सहित निकटतम पुलिस थाने में जमा कराना होगी।

योगदान का स्मरण जीवाजी राव ने शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

जीवाजी राव ने जो शिक्षा का सपना देखा था वह आज हो रहा है साकार : उप राष्ट्रपति श्री धनखड़

● मंथन संवाददाता

भोपाल। उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने कहा है कि सिंधिया परिवार का शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। मैंने आज उन महापुरूष की मूर्ति का अनावरण किया है, जिन्होंने स्वतंत्र भारत में शिक्षा सहित अनेक क्षेत्र में अपने कीर्तिमान स्थापित किए हैं। साथ ही शिक्षा को गति देने का कार्य भी किया है। शिक्षा से ही व्यक्ति के अंदर भाव आता है और मानव का निर्माण होता है। उप राष्ट्रपति ने कहा कि परिवर्तनशील दुनिया है, बदलाव होते रहेंगे लेकिन शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की। तकनीक में हमारा देश काफी आगे निकल चुका है। जीवाजी विश्वविद्यालय संस्थान भी नई-नई तकनीकों को लायेगा, ऐसी उम्मीद है। उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने जीवाजी विश्वविद्यालय परिसर में जीवाजी राव सिंधिया की प्रतिमा अनावरण के बाद आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में यह बात कही। अध्यक्षता राज्यपाल

मंगुभाई पटेल ने की। विशेष अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केन्द्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार, जिले के प्रभारी एवं जल संसाधन मंत्री श्री तुलसराम सिलावट, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला और उप राष्ट्रपति की धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश धनखड़ उपस्थित थीं।

उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ ने कहा कि सिंधिया परिवार का संसद में हमेशा योगदान रहा है। स्व. माधवराव सिंधिया ने अनेक क्षेत्रों में सराहनीय कार्य किया है। उन्हें जो भी मंत्रालय मिला है, उसमें उन्होंने अपना श्रेष्ठ कार्य किया है। उप राष्ट्रपति ने कहा जीवाजी राव ने जो शिक्षा का सपना देखा था वह आज साकार हो रहा है।

ग्वालियर के लिये आज का दिन रहेगा यादगार : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्वालियर के लिये आज का दिन यादगार रहेगा। आज ग्वालियर में दो बड़े कार्यों का शुभारंभ हुआ है। जियो साइंस म्यूजियम के माध्यम से पृत्वी की उत्पत्ति, उसकी रचना, भू-गर्भिक घटनाओं की जानकारी का संकलन प्राप्त होगा। साथ ही ज्ञान, विज्ञान के समावेश से युवाओं नई जानकारियां प्राप्त होंगीं। इसके साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले जीवाजी राव सिंधिया की मूर्ति का अनावरण भी किया गया है। जीवाजी विश्वविद्यालय ने न केवल मध्यप्रदेश में बल्कि सम्पूर्ण देश में अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

पंडित स्वपन चौधरी हुए तानसेन अलंकरण से सम्मानित, उस्ताद जाकिर हुसैन को याद कर कहा- उनकी कमी खलेगी

ग्वालियर। ग्वालियर में आयोजित अखिल भारतीय तानसेन समारोह के तीसरे दिन 2023 के तानसेन अलंकरण और राजा मानसिंह तोमर सम्मान के लिए दो महत्वपूर्ण नामों की घोषणा की। ये पुरस्कार भारतीय संगीत की धारा में विशेष योगदान देने वाले कलाकारों और संस्थाओं को दिए गए। तानसेन अलंकरण भारतीय संगीत के सबसे प्रतिष्ठित अवार्डों में से एक है। इस बार देश के प्रसिद्ध तबला वादक पंडित स्वपन चौधरी को प्रदान किया गया। राजा मानसिंह तोमर सम्मान 2023 इंदौर की कला संस्था सानंद न्यास को मिला। इस खास मौके पर पद्मश्री पंडित स्वपन चौधरी ने अपने सम्मान पर खुशी और गर्व का इजहार करते हुए कहा कि वह एक म्यूजिशियन हैं और उन्हें अब तक कई पुरस्कार मिल चुके हैं, लेकिन तानसेन अलंकरण उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। पंडित स्वपन चौधरी ने यह भी कहा कि वह हमेशा तानसेन के आशीर्वाद के साथ बजाते हैं। यह उनके लिए सौभाग्य की बात है कि उन्हें यह प्रतिष्ठित अलंकरण मिला। उन्होंने अपनी प्रस्तुति के पहले कहा कि वह हमेशा एक शिक्षार्थी रहे हैं। अब तक जो संगीत उन्होंने सुना है, वह उनके लिए एक नई दिशा की तलाश है।

म.प्र. सरकार का एक वर्ष का कार्यकाल मध्यप्रदेश देश में पहला ऐसा राज्य है जहां 2 नदी जोड़ो परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है, इससे जलस्रोत परस्पर जुड़ेंगे तो धरती का जल स्तर सुधरेगा

विरासत के साथ विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के संकल्प का एक वर्षः डॉ. मोहन यादव

● मंथन संवाददाता

भोपाल। देश का हृदय प्रांत मध्यप्रदेश गौरवशाली इतिहास और विश्वविख्यात सांस्कृतिक परंपराओं के लिये प्रसिद्ध है। सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक मानव सभ्यता के कई चिन्ह मध्यप्रदेश की धरती पर हैं। यहां पर्याप्त भू-संपदा, वन-संपदा, जल-संपदा, और खनिज-संपदा है। हम विगत एक वर्ष में विकसित मध्यप्रदेश निर्माण के साथ प्रदेश की विरासत को सहेजने के संकल्प को लेकर आगे बढ़े हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि डबल इंजन की सरकार का लाभ मध्यप्रदेश और प्रदेशवासियों को मिल रहा है। इस विशेष संयोग में प्रदेश ने नवाचारों के साथ विकास के कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इन दिनों प्रदेश में जनकल्याण पर्व मनाया जा रहा है। यह प्रदेश की समृद्धि का उत्सव है। इसमें भविष्य की कई संभावनाएं आकार लेंगी। शासन-प्रशासन और प्रदेशवासी सभी मिलकर विकास की गंगा बहाएंगे। आपकी सरकार, आपके द्वार होगी और जनता के हित जनता तक पहुंचेंगे। इसमें नई सौगातें

भी शामिल होंगी।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो के स्वप्न को मध्यप्रदेश में धरातल पर उतारा जा रहा है। 17 दिसंबर को पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना तथा 25 दिसंबर को केन-बेतवा लिंक परियोजना का शिलान्यास प्रधानमंत्री मोदी द्वारा किया जायेगा। यह आनंद का विषय है कि मध्यप्रदेश देश में पहला ऐसा राज्य है जहां 2 नदी जोड़ो परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। इससे जलस्रोत परस्पर जुड़ेंगे तो धरती का जल स्तर सुधरेगा, हमारे गांव और क्षेत्रों को पानी सुलभ होगा तथा अन्नदाता को सिंचाई के लिये पर्याप्त पानी मिलेगा। प्रदेश में जिस तरह कृषि, उद्योग, पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन के लिये संभावनाएं विकसित हो रही हैं। इसमें औद्योगिक क्रांति, हरित क्रांति और पर्यटन क्रांति की त्रिवेणी से गरीबी पूर्णतः समाप्त हो जायेगी। पिछले दिनों रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित करके मध्यप्रदेश के गांव-गांव को औद्योगीकरण और आधुनिक उत्पाद से जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। भविष्य में जिला स्तर पर भी इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित होंगी। हैदराबाद, कोयंबटूर तथा मुंबई में रोड-शो और यूके-जर्मनी के उद्योगपतियों को निवेश के लिये प्रदेश में आमंत्रित करना उद्योग विस्तार का उपक्रम है। क्षेत्रीयता से लेकर ग्लोबल स्तर तक उद्योग के लिये किया गया यह पहला नवाचार है।

प्रधानमंत्री जी ने विकसित भारत निर्माण के लिये ज्ञान (GYAN) गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी के सम्मान की बात कही है। हमने इन्हीं 4 आधार स्तंभों पर केंद्रित समग्र विकास का रोडमैप तैयार किया है। प्रदेश सरकार गरीब कल्याण, युवा शक्ति, किसान-कल्याण और नारी शक्ति मिशन लागू करने जा रही है। हमारा लक्ष्य है अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का कल्याण हो, उन्हें बेहतर भविष्य निर्माण का अवसर मिले। प्रदेश में हर गरीब की पढ़ाई, लिखाई, दवाई, नौकरी और रहने-खाने से लेकर जीवन की हर जरूरत को सरकार पूरा कर रही है। अब गरीब-कल्याण मिशन में होने वाली गतिविधियों और कार्यों से हर गरीब के जीवन-स्तर में सुधार आयेगा, उनकी समृद्धि से प्रदेश के विकास को गति मिलेगी। यह गरीबों के प्रति हमारी संवेदनशीलता ही है कि हुकुमचंद मिल के 30 साल पुराने विवाद से लेकर श्रमिकों की मिल से जुड़ी हर समस्या का हल निकाला और उन्हें उनका अधिकार दिलाया है, वहीं गंभीर बीमारी के गरीब मरीजों के लिये एयर एंबुलेंस सेवा भी शुरू की है।

पेज 1 का शेष

हंगामे की भेंट चढ़ गया संसद का शीतकालीन सत्र, डॉक्टर भीमराव आंबेडकर...

कामकाज में लगातार पड़ रही बाधा से लोकतांत्रिक संस्थानों पर जनता का विश्वास घट रहा है। हमने तेल क्षेत्र संशोधन बिल और बॉयलर्स बिल 2024 पारित किया और भारत-चीन संबंधों पर विदेश मंत्री के बयान को भी सुना, लेकिन ये उपलब्धियां हमारी विफलताओं से ढक गई हैं।

प्रश्न काल का रहा बुरा हाल

- लोकसभा में तय समय के 52 प्रतिशत हिस्से में चली कार्यवाही
- राज्यसभा में नियम समय के 39 प्रतिशत हिस्से में ही कार्यवाही
- केवल एक विधेयक पास हुआ 18वीं लोकसभा के पहले छह महीनों में
- यह पिछले छह लोकसभा कार्यकालों में सबसे कम संख्या रही
- राज्यसभा में 19 में से 15 दिनों में नहीं चल सका प्रश्न काल
- लोकसभा में 12 दिन ऐसे रहे, जब 10 मिनट से कम चला प्रश्न काल
- प्रश्न काल में सांसद सरकार से नीतियों और कार्यक्रमों पर सवाल पूछते हैं

संसद में हर घंटे खर्च हुए इतने करोड़ रुपए, फिर भी....

संसद का शीतकालीन सत्र 20 दिसंबर को खत्म हो गया। इस बार का सत्र काफी हंगामेदार रहा। विपक्ष ने अडानी और गृह मंत्री शाह के अंबेडकर वाले बयान पर विरोध किया। जबकि विपक्ष ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी ने भाजपा सांसदों से धक्का-मुक्की की। इस दौरान भाजपा सांसद प्रताप सारंगी को चोट लगी। राहुल गांधी पर एफआईआर भी दर्ज हो गई। इस हंगामेदार सत्र में कितना काम हुआ, सदन कितने घंटे चला और सदन चलाने में कितना खर्चा आता है... इन तमाम सवालों का जवाब जानते हैं।

लोकसभा की प्रोडक्टिविटी: लोकसभा सचिवालय के आंकड़ों की मानें तो सदन की उत्पादकता यानी प्रोडक्टिविटी Productivity 58 प्रतिशत के आसपास रही। लोकसभा में 61 घंटे 55 मिनट कामकाज हुआ। लोकसभा में 20 बैठकें हुईं।

राज्यसभा की प्रोडक्टिविटी: जबकि राज्यसभा में 43 घंटे और 27 मिनट कामकाज हो पाया। इस सत्र की उत्पादकता मात्र 40.03 प्रतिशत के आसपास रही। राज्यसभा में 19 बैठकें हुईं। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने सभी दलों से राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठने का आह्वान किया। साथ ही सांसदों से संसदीय मर्यादा बहाल करने का आह्वान भी किया।

कितने बिल पेश हुए?: इस शीतकालीन सत्र में लोकसभा में 5 विधेयक पेश हुए, इनमें से 4 पारित हुआ। जबकि राज्यसभा में तीन बिल पारित हुए हैं। दोनों सदनों में 'भारतीय वायुयान विधेयक, 2024' नामक एक बिल पारित किया गया।

इतने करोड़ रुपये हुए खर्च: संसद की कार्यवाही में एक मिनट के 2 ।50 लाख रुपये खर्च होते हैं। एक घंटे में 1 ।5 करोड़ रुपये खर्च होते हैं। इस बार 20 दिन तक संसद चली है, करीब 84 करोड़ रुपये इस कार्यवाही में खर्च हुए। लेकिन संसद का ज्यादातर समय 'धक्का-मुक्की' और 'तू तू-मैं मैं' में बीत गया। सरकार और विपक्ष के बीच समन्वय न होने के कारण यह सत्र हंगामेदार हुआ। नतीजतन, राज्यसभा और लोकसभा में प्रोडक्टिविटी काफी कम हुई।

डॉक्टर भीमराव आंबेडकर के नाम पर संसद परिसर में पक्ष-विपक्ष के सांसदों की भिड़ंत

संसद में तख्तियां लहराना, कागज के गोले पीठासीन अधिकारी की तरफ फेंकना, कागज के जहाज बनाकर उड़ाना, कागज फाड़कर फेंकना, बिल की प्रतियां छीनना-फाड़ना, वेल में आकर हंगामा और नारेबाजी करना....संसद में हमने ये सब कुछ देखा है। देखा है देश की सबसे बड़ी पंचायत में नोटों की गड्डियां भी लहराते हुए। संसदीय गरिमा को तार-तार होते हुए। विरोधी दल के सांसद पर 'कटु।' जैसे शब्दों का इस्तेमाल होते हुए। लेकिन अब तो हद ही हो गई। गुरुवार को जो कुछ भी हुआ उससे संसदीय गरिमा कलंकित हुई। धक्कामुक्की के आरोप लगे, महिला सांसद से बदसलूकी के आरोप लगे, किसी से सिर में चोट लगी तो किसी का घुटना चोटिल हुआ। पक्ष-विपक्ष एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। आरोप हमला करने का, आरोप धक्का देने का, आरोप नौटंकी का....यहां तक कि मामला पुलिस स्टेशन पहुंच गया। एफआईआर हो गई। आरोप लगाने वाले भी माननीय। जिन पर आरोप लगा वो भी माननीय। और ये सब कुछ हुआ बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के नाम पर। सोचिए भला, आंबेडकर की आत्मा इस मंजर को देखकर क्या सोच रही होगी।

पक्ष-विपक्ष में गतिरोध तो होता ही है। ये तो इनके नाम से ही जाहिर है। लेकिन ये कैसा गतिरोध कि संसद ही न चले। एक अनुमान के मुताबिक संसद की कार्यवाही पर हर मिनट करीब ढाई लाख रुपये का खर्च आता है यानी एक घंटे में एक करोड़ रुपये। ये पैसे जनता के ही तो हैं। उसी के दिए टैक्स के तो हैं। लेकिन संसद का न चलना जैसे सामान्य होता जा रहा है। कभी किसी मुद्दे पर विपक्ष हंगामा करके संसद नहीं चलने देता तो कभी किसी मुद्दे पर सत्ता पक्ष ही हंगामा करके सदन नहीं चलने देता। इसी सत्र को देख लीजिए। अडानी मुद्दे पर कांग्रेस ने संसद नहीं चलने दी तो जॉर्ज सोरोस के मुद्दे पर सत्ता पक्ष ने।

किसी तरह कभी सदन की कार्यवाही चल भी जाए तो उन बातों को मुद्दा बना दिया जाता है, जो मुद्दे ही नहीं होते। अभी क्या हुआ। संविधान पर चर्चा के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक लंबा भाषण दिया। भाषण के जरिए बीजेपी को सच्ची आंबेडकर वादी और कांग्रेस को आंबेडकर विरोधी ठहराने की भरपूर कोशिश की। कांग्रेस के द्वारा बाबा साहेब के कथित अपमान वाले गुनाहों की एक लंबी लिस्ट भी सुना डाली। लेकिन बहुत ही चतुराई से विपक्ष ने शाह के भाषण के एक छोटे से हिस्से को लपक लिया। 'अभी एक फैशन हो गया है।।। आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर। इतना नाम अगर भगवान का लेते तो 7 जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।' ये शाह के ही शब्द थे। राज्यसभा में बोले गए। सिर्फ इतना हिस्सा कोई भी देखेगा तो उसे यह लगना स्वाभाविक है कि वक्ता को आंबेडकर की जय-जयकार से दिक्कत है, तारीफ से दिक्कत है। लेकिन ये सिर्फ अधूरा सच था, अर्धसत्य। विपक्ष इसे लेकर सदन से लेकर बाहर तक आक्रामक हो गया। अमित शाह के इस्तीफे की मांग होने लगी। माफी मांगने की मांग होने लगी। बीजेपी में खलबली मच गई।